बढ़ते पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभाव

भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा
सहायक आचार्य (ईएएफएम)
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
bhupendramahendra@gmail.com

शोधसार

पर्यावरण दो घटकों से मिलकर बनता है। सजीव घटक जिसमें जीव–जन्तु, वनस्पति, कवक, शैवाल आदि सभी प्रकार के सूक्ष्म जीव आते है। निर्जीव घटको में जल, थल, वायु, तापमान, नमी, मिट्टी, पर्वत आदि अति है। पर्यावरण हमारें जीवन का आधार है। हम पर्यावरण तन्त्र की एक इकाई है। जीवन की हर आवश्यकता पर्यावरण से ही पूरी होती है। इसलिए पर्यावरण के प्रति हमारे कुछ दायित्व भी है। जिसका निर्वाह करना हमारा कर्त्तव्य है। पर्यटन हमारे निरस जीवन में प्राणों का संचार करता है। पर्यटन कई प्रकार का होता है। जैसे, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहसिक जब यह पयर्टन पर्यावरण के करीब ले जाता है तो पर्यावरण पर्यटन कहलाता है। जिसमें हम प्रकृति की बहुमूल्य निधि का आनन्द लेते है। जिसके अन्तर्गत, झरने, तालाब, नदियां, पहाड़ी इलाके, पर्वत श्रृखलांए, रेत के टीले, बर्फ से ढके प्रदेश तथा उमें उपस्थित वन्य जीव एवं वनस्पतियां शामिल होती है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम पर्यावरण एवं पर्यटन की चर्चा करेंगे तथा बढ़ते पयर्टन का पर्यावरण पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करेंगे।

मुख्य शब्द – पर्यावरण, पर्यटन, पर्यटक, संरक्षण वन्य जीवन

अध्ययन के उद्देश्य

१. पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता को विकसित करना।
२. राष्ट्रीय धरोहर, वन सम्पदा, जैव विविधता के बारे में जानकारी एकत्रित करना।
३. पर्यटन के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी एकत्रित करना।

शोध प्रविधि

इस आलेख में लिखित सामग्री व सहायक आलेखों व पत्रिका में ली गई शोध में विश्लेषणात्मक व तर्कचिन्तन विधि का प्रयोग किया गया है।

भूमिका

पर्यावरण पर्यटन या इकोटूरिज्म ऐसी गतिविधियां है जो पर्यटन उद्योग को पारिस्थितिक के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। पर्यावरण पर्यटन को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है। इंटनरनेशनल इको टयूरिज्म सोसायटी ने १९९१ में इसकी परिभाषा इस प्रकार की थी ''पर्यावरण पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह दायित्वपूर्ण यात्रा है जिसमें पर्यावरण संरक्षण होता है और स्थानीय लोगो की खुशहाली बढ़ती है''

विश्व पर्यटन संगठन द्वारा की गई परिभाषा के अनुसार पर्यावरण पर्यटन के अन्तर्गत अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रो की ऐसी यात्रा शामिल है। जिसका निर्दिष्ट लक्ष्य प्रकृति का अध्ययन और सम्मान करना तथा वनस्पति एवं जीव–जन्तुओ के दर्शन का आनन्द लेना तथा साथ ही इन क्षेत्रों से सम्बन्ध सांस्कृति पहलुओं का अध्ययन करना है।

पर्यटन आज दूनिया का सबसे बड़ा उद्योग है तथा पर्यावरण पर्यटन उद्योग का सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिस्सा है। पर्यावरण पर्यटन हमें प्रकति के बहुत नजदीक ले जाता । इस दौड़भाग भरे जीवन के सूकुन के पल ढुढ़ने के लिए लोग यात्राए करते है। जब यही यात्राएं प्रकृति के करीब ले जाती है तो जीवन एक नई ऊर्जा से भर जाता है।

ऊंचे–ऊंचे पहाड़ों की चोटिया, खुले हरे–भरे उद्यान, कल–कल करके बहती नदियां, तालाब, झीले पक्षियों का कलराव, वन्य जीवों की क्रीडाएं, सागर की

उठती हुई लहरों में प्रकृति का ये नाद हृदय में नई तरगों का समावेश करता हुआ प्रतीत होता है। पर्यावरण भौतिक, रसायनिक तथा जैविक कारको की समष्टिगत इकाई है।

पर्यावरण पर्यटन का एक रूप है जिसमें प्रकृति के साथ कोई छेड़–छाड़ किये बिना, प्राचीन एव अपेक्षाकृत निर्विवाद प्राकृतिक क्षेत्रों का दौरा किया जाता है। जिसमें पर्यावरण के संरक्षण एवं स्थानीय लोगों के कल्याण में सुधार के प्राकृतिक क्षेत्रों के लिए जिम्मेदार यात्रा है जिसका उद्देश्य पर्यटकों को शिक्षित करना, पारिस्थितक तंत्र के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध करना, स्थानीय समुदायों के आर्थिक विकास एवं राजनैतिक सशक्तिकरण को लाभ पहुचाना या विभिनन संस्कृतियों एवं मानवाधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना है।

पर्यटन व पर्यावरण एक दुसरे पर आश्रित है। एक स्वस्थ पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा देते है दूसरी और अगर पर्यावरण दूषित हो तो ये पर्यटन ही नहीं जीवन के लिए भी अनुपयोगी सिद्ध होता है। जिससे पर्यटन के विकास में गिरावट आती है।

पर्यटन से व्यक्ति के मानसिक एवं शारीरिक तनाव दूर होता है। देश के कई राज्य में जहां प्रकृति के खुबसूरत नजारे और पर्वत है, वहां पर ज्यादातर पर्यटन व्यवसाय अर्थात टुरिज्म दफतरों ने अपनी जगह बना ली है। पर्यटकों को उनके अनुसार, आरामदायक यात्रा कराने के लिए पर्यटक दफतरों व दुकानों को काफी पैसे मिलते है। पर्यटक के कारण ही पर्यटन स्थल विकसित होते है।

पर्यटन कई प्रकार के होते है। कुछ स्थान ऊंचे–ऊंचे पर्वतों के लिए प्रसिद्ध है। तो कुछ ना–ना प्रकार के वन्य जीव–जन्तुओं तथा वनस्पतियों से भरे वनों के लिए तो कोई दूर–दूर तक फैले रेत के धोरे के लिए। वही कुछ स्थान कभी ना खत्म होने वाले समुद्रों के लिए प्रसिद्ध है।

आजकल महिला एवं पुरूष दोनो ही नौकरी करते है तथा अपने जीवन में दफतरी कार्यों एवं रोजगार में ही व्यस्त रहते है। इसी कारण परिवार तथा बच्चों से भी दूरी बनी रहती है। लेकिन अवकाश काल में लोग परिवार के साथ सुकून को समय बिताने तथा मनोरंजन के लिए यात्रांए करते है तथा नए पर्यावरण में प्रवेश करते जो कुछ दिनों या सप्ताहों का होता है। एक उबाऊ दिन–चर्या से हटकर कुछ नया करने को उत्साहित करता है।

पर्यावरण पर पर्यटन का नकारात्मक प्रभाव

१. प्राकृतिक वनस्पति को नुकसान – जब पर्यटक किसी प्राकृतिक परिवेश में मनोरंजन के लिए जाते है तो वे वहां पर अपना समय व्यतीत करते है ऐसे भी वहां उनके रहने सहने तथा खाने–पीने की व्यवस्था करने के लिए प्राकृतिक वनस्पति का दोहन किया जाता है जैसे कैम्प फायर के लिए लकड़ियों को काटना, रहने के लिए टैण्ट एवं रिसोर्टस आदि को निर्मित करने के लिए बहुमूल्य वनस्पतियों का कटाव यहां तक की लोग सिगरेट वगैरह का इस्तेमाल करते है जिसकी लापरवाही से आकस्मिक आग जैसे विनाशकारी हादसे होने का भय रहता है।

कई बार शोध के लिए लोग फूलो, कवको, पौधो के संग्रह करने के लिए उनको तोड़ते है। जिसका असर इनकी प्रजातियों की संख्या पर पड़ता है। फूलो की घाटियों में भ्रमण करते सैलानियों द्वारा फूलो को तोड़ा जाता है। जिससे इन खुबसूरत घाटियों में हर वर्ष फूलों की संख्या कम होती जा रही है। जिसके कारण ये प्राकृतिक स्थल अपना मूल स्वरूप खोते जा रहे है। पर्यटकों को आवगमन की सुविधा देने के लिए जब राजमार्गो एवं सड़कों का निर्माण किया जाता है तो कृषि योग्य भूमि का उपयोग किया जाता है। जिससे कृषि भूमि कम होती जा रही है।

२. वन्य जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव – सड़कों एवं राजमार्गो के विकास के कारण वन्य जीवों का जीवन कठिन हो गया है। पार्को के आस–पास के क्षेत्रों में विकास के कारण जानवरों के आवागमन में विरोध उत्पन्न होता है। पर्यटकों के जीवो के परिवेश में हस्तक्षेप के कारण जंगली जीवों के व्यवहार में बदलाव आ जाता है जिससे वो और भी ज्यादा हिसंक हो जाते है। जिससे वन्य जीवन प्रभावित होता है। साथ ही साथ उनके प्रजनन क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है।

पर्यटकों द्वारा मनोरंजन के लिए की जाने वाली गतिविधियां जैसे घुड़सावारी, स्केटिंग, कैंपिग,

ट्रैंकिग, पिकनिक जैसे खेल पक्षी जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है। पानी खेल गतिविधियां जैसे नौकायान, सर्फिंग, बोटिंग जलीय जीवों जैसे मछलियों एवं मगरमच्छों को परेशान कर देते है।

३. प्रदूषण – पर्यटकों द्वारा पर्यटन स्थलों पर भीड़ भाड़ लगाने से तथा आग जलाने और वाहनों के अत्यधिक उपयोग से वायु प्रदूषण होता है। साथ ही साथ वाहनों से निकलने वाला धुंआ वातावरण को प्रतिकूल बनाता है तथा शोर शराबा एवं वाहनों की आवाजे ध्वनि प्रदूषण को बढ़ाती है। पर्यटक जल का अपव्यय करते है तथा जल में मलमूत्र एवं अपशिष्ट प्रदार्थो का विसर्जन से जल प्रदूषित होता है। लोग घुमने आते है, तो प्लास्टिक की थैलियों, बोतलों एवं प्लास्टिक बन्द खाद्य उत्पादों का उपभोग करते है जो भूमि प्रदूषण को बढ़ाता है। जब यही पदार्थे समुन्द्र एवं नदियों के तटों पर इक्कठे हो जाते है तो जल प्रदूषण तो बढ़ता ही है साथ ही इन स्थलों की सुन्दरता को कम करत देते है। ट्रैंकिग स्थल प्लास्टिक टैंग/बैग, डिब्बे एवं दूरी बीयर बोतलों से भरी रहती है।

४. ट्रैफिक जाम एवं ग्रामीण परिवेश में बदलाव – ऐतिहासिक स्थलों, पुरातत्विक स्मारकों, खुबसूरत घाटियों एवं सुरम्य उद्यानों को भीड–भाड़ वाले पार्किंग स्थलों में बदल दिया गया है। पर्यटक कार, कोच जैसे परिवाहन के साधनों से सड़कों पर जाम लगा देते ह। जिससे इन ग्रामीण परिवेशों में अशान्ति उत्पन्न होती है।

पर्यावरण पर पर्यटन का सकारात्मक प्रभाव –

१. संरक्षण – वैसे तो पर्यटन के कारण वन्य जीवों के जीवन बाधित होता है किन्तु यह बात भी उतनी ही सत्य है कि पर्यटन से ही पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है। अनियोजित पर्यटन किसी भी क्षेत्र विशेष की वहन क्षमता पर तीव्र दबाव डालता है। जिससे वन्य जीवन प्रभावित होता है। लेकिन जब सामान्य व्यक्ति वन्य जीवन के प्रति सजग हो जाता है तो यही पर्यटन वन्य जीवन के संरक्षण में वरदान साबित होता है। कोई भी प्रकृति प्रेमी प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहेगा बल्कि उसका संरक्षण एवं सुरक्षा करना अपना कर्तव्य समझेगा।

२. आर्थिक विकास – पर्यटन के कारण ही संवेदनशील क्षेत्रों तथा आवासो के संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है। पार्किंग स्थलों से होने वाली आय तथा इसी प्रकार अन्य स्त्रोतों पर लगने वाले कर से होने वाली आय को पर्यावरण के संवेदनशील क्षेत्रो के मैनेजमेंट तथा संरक्षण में सहायता मिलती है।

३. सरकार की आय में वृद्धि – आयकर, विक्रय कर या मनोरंजन के साधनों पर लगने वाला शुल्क राफटिंग और फिशिंग जैसे गतिविधियों के लिए लाईसेंस शुल्क आदि से होने वाली आय सरकार प्राकृतिक, संसाधनों को व्यवस्थित व प्रबन्धन करने में उपयोग करती है।

४. स्थानीय लोगो को रोजगार – पर्यावरणीय पर्यटन से उस क्षेत्र के लोगो को रोजगार मिलता है, इससे उनको आर्थिक सहायता मिलती है, पर्यटक यादगार के तौर पर पर्यटन के दौरान वहां के स्थानीय दुकानदारों से साज–सजावट या आकर्षक चीजें खरीदते है। वहां ठहरने के लिए होटल, मोटल व खाने–पीने के लिए रेस्टोरेंट को जाते है। जिसके लिए पर्यटक अपना धन खर्च करते है जो स्थानीय लोगों की आय का साधन बनता है।

५. सड़कों एवं राजमार्गो का विकास – पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सड़कों का एवं राजमार्गो का विकास होता है जो यात्रा का आरामदायक बनाता है।

६. होटलों एवं आवास स्थान एवं बिजली पानी की व्यवस्था – पर्यटकों की संख्या का किसी भी क्षेत्र में वृद्धि होने पर वहा के इन्फ्रास्टकचर का विकास होता है। वहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए होटलों धर्मशालाओं का विकास किया जाता है। पर्यटकों के लिए स्वच्छ पानी व खाद्य सामग्री की व्यवस्था की जाती है। जिससे वह क्षेत्र सुख–सुविधाओं में समृद्ध बनता है।

निष्कर्ष –

हमारा पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग है या यह कहे की हम पर्यावरण का ही अंग है। एक स्वस्थ पर्यावरण का मतलब स्वच्छ हवा, पानी एवं कृषि भूमि से है। पर्यटन मनोरंजन का वह साधन है। जिससे एक तनाव पूर्ण, नीरस एवं भाग दौड़ वाली जिन्दगी को एक सरस, जीवन में बदला जा सकता । पर्यटन से मन खुश होता है। जिससे हम अपने कार्यों के प्रति और ज्यादा उत्साही हो जाते है। और उनको ज्यादा एकाग्रता के साथ कर सकते है। पर्यावरण एवं पर्यटन दोनों ही एक दुसरे के पूरक है। इस शोध पत्र में हमने पर्यटन के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की है। जिसमें यह भी देखा गया है कि पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करके इन नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है। हर पर्यावरण प्रेमी पर्यटक को उचित पर्यावरण शिक्षण प्रदान करके प्रकृति के ह्रास को रोका जा सकता है। वन्य जीवों व वनस्पति का संरक्षण एवं प्रबन्धन हमारे कर्तव्य ही नहीं बल्कि हमारे पर्यावरण तंत्र का विकास है।

संदर्भ सूची

१. व्यास, राजेश कुमार (२००४) राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर।
२. कपूर, विमल कुमार (२००८) पर्यटन प्रबंध एवं मानव संसाधन विकास, रजत प्रकाशन नई दिल्ली
३. सुरजीत सिंह (२०१२) ''पर्यटन का भौगोलिक स्वरूप'' रावत प्रकाशन नई दिल्ली ।
४. कमलेश बरवा (२०१७) राजस्थान में परिस्थितिकी पर्यटन का आधार : पर्यावरण
५. श्रवण कुमार प्रजापत, संजीव बन्सल (२०१८)राजस्थान में पर्यावरण–समीक्षात्मक अध्ययन
६. डॉ. राजेश कुमार (२०१९) पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभाव ।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com